विचार बिन्दु

अपनी करनी कभी निष्फल नहीं जाती। –कबीर

पुराने वनों का संरक्षण सबसे बड़ा प्राकृतिक जलवायु समाधान है

ऐसे वन जो विकास के उन्नत चरण में हैं या जहाँ विविध प्रजातियों के पुराने, मोटे और बड़े वृक्षों की बहुतायत है उन्हें दुनिया प्राइमरी फॉरेस्ट्स या ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स के नाम से जानती है। ऐसे वनों के पारिस्थितिक, सामाजिक और आर्थिक महत्त्व पर विश्व भर में बडी शोध हुई है।ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स की अभी भी कोई एक मानक परिभाषा नहीं है। फिर भी इन वनों में प्रमुख प्रजातियों की लंबी उम्र, प्राकृतिक गड़बडी का कम से कम होना, मानव हस्तक्षेप का कम होना, छाया-सहिष्णुता या छाया में भी उग सकने वाली प्रजातियों की बहुलता, विशिष्ट संरचनाओं, जैसे बड़े-बड़े पेड, खोखलों में घोंसले बनाने वाले पक्षियों की उपस्थिति और बहुतायत, भारी-भरकम पुराने वृक्षों के यत्र तत्र गिरे-पडे संचित सूखे तने, मिट्टी के ऊपर पत्तियों और सूखी टहनियों की मोटी परत आदि लक्षणों के संदर्भ में पहचाना और परिभाषित किया जाता है। इन क्षेत्रों में मिलने वाले बडे वृक्षों में मधुमक्खियों के छत्ते भी प्राय: देखे जाते हैं। इसके अलावा बड़े वृक्षों के मुख्य तने में छाल में निवास करने वाले विविध प्रजातियों के कीडे मकोड़े पाये जाते हैं। सैप्रोजायलिक कवक, लाइकेन तथा कीडों की प्रजातियां बडी संख्या में सूखी गिरी पडी लकडी पर निर्भर होती हैं।

ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट के नीचे की मिट्टी की सबसे बडी खासियत यह है कि इसमें पोषक तत्वों की प्राय: कोई कमी नहीं पाई जाती। नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम के साथ सूक्ष्म पोषकतत्व भी प्रचुर मात्रा में मिलते हैं क्योंकि यदि आग, चराई और कटान नहीं हो रहा है तो बायोजियोकेमिकल चक्र सुचारु रुप से चलते हैं। ऐसा संभव है ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स के आसपास कोई नदी नाला या नम भूमि इत्यादि हो। प्राय: यह भी देखा गया है कि ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स में पौधों और प्राणियों की जो प्रजातियां मिलती हैं वे समीपवर्ती वन क्षेत्रों से कुछ भिन्न हो सकती हैं। इन क्षेत्रों में प्राय: बड़े बीजों वाली प्राणी-विकीर्णित वृक्ष प्रजातियों का बाहुल्य होता है।

उष्णकटिबंधीय वनों में जहां प्रजातियों की विविधता और प्राकृतिक वातावरण पर मानव दबाव दोनों ही अधिक हैं, भूमि-उपयोग परिवर्तन जैव-विविधता को गंभीर खतरे में डालते हैं। कृषि, लकडी के लिये कटान, उद्योगों की स्थापना और अन्य उपयोगों के लिये उष्णकटिबंधीय वनों के तेजी से बदलाव उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता को नष्ट कर देते हैं। एक शोध जो 138 अध्ययनों की मेटा-एनालिसिस का उपयोग कर की गयी, के परिणाम उष्णकटिबंधीय जंगलों में मानवीय दखल के कारण विक्षोभ और भूमि रूपांतरण से जैव-विविधता पर पड़ने वाले प्रभाव का वैश्विक मूल्यांकन प्रदान करते हैं (देखें, एल. गिब्सन इत्यादि, नेचर, 478(7369):378-381, 2011)। इस अध्ययन में प्राथमिक वनों जिनमें कोई मानवीय दखल नहीं था और बिगड़े वनों जिनमें मानवीय दखल था, में जैव-विविधता का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। यह पाया गया अवक्रमित या बिगडे वनों में जैव-विविधता की स्थिति तमाम कारणों से बहुत ख़राब थी। यह वैश्विक शोध निर्विवाद रूप से सिद्ध करती है की वन-विनाश के विविध कारणों का उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता पर अत्यंत हानिकारक प्रभाव पड़ता है। उपरोक्त एवं अन्य शोध के परिणाम स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं कि जब उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता को बनाये रखने की बात आती है, तो प्राथमिक वनों का कोई विकल्प नहीं है (देखें, जे. बार्लो इत्यादि, प्रोसीडिंग्स ऑफ़ द नेशनल अकैडमी ऑफ़ साइंसेज यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका, 104(47):18555-18560, 2007)।

संपूर्ण विश्व के कुल 23 से 26 प्रतिशत वन ही अब प्राइमरी या ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स के रूप में बचे हैं। राजस्थान में कई जिलों में ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स अभी भी बचे हुये हैं, हालांकि ऐसे वन उष्णकटिबंधीय शुष्क क्षेत्रों में विशेष रुप से संकटापन्न हैं। संकट के मुख्य कारण आसपास रहने वाली मानव आबादी के पालतू मवेशियों द्वारा चराई, जलाऊ लकडी के लिये कटाई और घर बनाने के लिये इमारती लकड़ी की कटाई इत्यादि हैं। ऊपर से प्राकृतिक और मानव-जनित कारणों से आग भी ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को बडी हानि पहुँचती है। कई क्षेत्रों में बडे वृक्षों की शाखाओं को काट कर साल दर साल चारे के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिये पुराने वनों से अर्जुन (कहुआ, कोहडा) के बड़े वृक्षों की शाखाओं को काटकर भैंसों के चारे के रूप में उपयोग होता है। हर साल शाखा कटान के कारण इन वृक्षों में फूल, फल और बीज लगने की प्रक्रिया भी बाधित होती है। बीजों का उत्पादन और विकीर्णन नहीं होने से प्राकृतिक पुनरुत्पादन बाधित होता है। जिन क्षेत्रों में बीजों का उत्पादन होता भी है वहां बीज विकीर्णन करने वाली वन्य-प्राणी प्रजातियां ना होने से अब केवल बड़े वृक्ष ही बचे हैं क्योंकि प्राकृतिक पुनरुत्पादन नहीं के बराबर है। जो भी थोड़ा बहुत पौधे उगते हैं वे भी बडे होने के पहले ही चर लिये जाते हैं। आग का भी प्रकोप होता है, हालांकि उष्णकटिबंधीय शुष्क वनों में पिछले 30 वर्षों वनों में प्राय: सतही आग ही लगी है। इससे बडे वृक्षों को भले ही हानि ना होती हो, किंतु बीजों, बिजौलोंव प्राकृतिक पुनरुत्पादन को बडी हानि पहुंचती है। क्लाइमेट चेंज की दशा में आर्द्र तराई क्षेत्रों के वनों में हर जगह पुराने जंगलों में जमीन के ऊपर के जैवभार (बायोमास) में कमी आने की भारी आशंका है। उष्ण कटिबंध में वर्ष 2081-2100 के मध्य तक तापमान बढ़ने के कारण इस कमी का अनुमान 41 प्रतिशत और विश्व स्तर पर 29 प्रतिशत है (देखें, एम. लर्जावारा इत्यादि, कार्बन बैलेंस एंड मैनेजमेंट, 16(1):31, 2021)।

हर साल शाखा कटान के कारण इन वृक्षों में फूल, फल और बीज लगने की प्रक्रिया भी बाधित होती है। बीजों का उत्पादन और विकीर्णन नहीं होने से प्राकृतिक पुनरुत्पादन बाधित होता है। जिन क्षेत्रों में बीजों का उत्पादन होता भी है वहां बीज विकीर्णन करने वाली वन्य-प्राणी प्रजातियां ना होने से अब केवल बड़े वृक्ष ही बचे हैं क्योंकि प्राकृतिक पुनरुत्पादन नहीं के बराबर है।

पुराने वनों का संरक्षण और प्रबंध प्राकृतिक जलवायु समाधान के रूप में विशेष महत्व रखता है। कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन और भंडारण के साथ हीइन वनों के अनगिनत लाभ हैं। वनानुभव व पारिस्थितिक पर्यटन, मानव के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य हेतु संसाधन, जैव-विविधता व आनुवंशिक संसाधन का संरक्षण, भौम-जलस्तर में बढ़त व जल-धाराओं, झरनों व नदियों के रूप में पानी की उपलब्धता, देववनों के रूप में स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों के वाहक होते हैं। ऐसे वनों के संरक्षण को बढ़ावा देने वाली रणनीतियाँ केवल इन वनों को केन्द्रित कर बनाये जाने के बजाय सम्पूर्ण भू-परिदृश्य के स्तर पर बनाना आवश्यक होता है। पहली बात इनमें बड़े वृक्षों की बहुतायत के कारण बडी मात्रा में कार्बन जमा होता है और सैकडों साल तक होता रहता है, इसीलिये ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को विश्व के कार्बन भण्डार के रूप में जाना जाता है। क्लाइमेट चेंज मिटीगेशन के लिए यह भण्डार अति महत्वपूर्ण है (देखें, एस. लुस्स्येर्ट इत्यादि, नेचर, 455(7210):213-215, 2008)। दूसरी बात यह है कि पुराने पेडों में अपेक्षाकृत स्थिर विकास दर होती है, जो ग्लोबल वार्मिंग के विरुद्ध उल्लेखनीय प्रतिरोध देती है (देखें, एम. कोलेंगेलो इत्यादि, साइंस ऑफ़ द टोटल एनवायरनमेंट, 801,149684, 2021)। इसके साथ ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे वन अन्य क्षेत्रों में वनों के पुनर्स्थापन के लिये उन प्रजातियों के बीजों और जैव-विविधता के सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं जो लोगों के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं किन्तु उष्णकटिबंधीय वनों के अन्य क्षेत्रों से स्थानीय रुप से विलुप्त हो चुकी हैं (देखें, डी.एन. पाण्डेय, कन्जर्वेशन बायोलॉजी, 17(2):633-635, 2003)।

इसी बात को ध्यान में रखते हुये देश के विभिन्न राज्यों में सभी ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को चिन्हित कर संरक्षण व संवर्धन एवं सतत विकास किया जाना आवश्यक है। इन क्षेत्रों के अंदर पुराने और बड़े वृक्षों का संरक्षण और साथ में संपूर्ण क्षेत्र का संरक्षण दोनों को ही ध्यान रखना आवश्यक है। यहाँ चराई और कटाई से बचाव के साथ-साथ यहां सूखी गिरी पड़ी लकडी को भी बाहर निकालने से रोकना आवश्यक है। जैसा कि ऊपर बताया गया है सूखे गिरे पड़े वृक्ष भी तमाम प्रजातियों के संरक्षण के लिये आवश्यक हैं।

यदि इन क्षेत्रों में प्राकृतिक पुनरुत्पादन नहीं हो रहा है तो वनों के वितान में जहां खुले स्थान मिल रहे हैं वहां पर उसी प्रकार की प्रजातियों का रोपण आवश्यक है जो ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट में पाई जाती हैं। ऐसी प्रजातियां प्राय: बड़े बीजों वाली और चौडी पत्ती वाली होती हैं। बड़े बीज होने से इनका विकीर्णन बड़े शरीर वाले प्राणियों द्वारा ही हो सकता है परंतु चूंकि अनेक क्षेत्रों से बडे शरीर वाले प्राणी विलुप्त हो चुके हैं इसलिए हमें वृक्षारोपण, सीधी बुवाई और डंडारोपण करना आवश्यक हो जाता है। उदाहरण के लिए राजस्थान में बड़े बीजों वाली प्रजातियों में आम, महुआ, जामुन, अर्जुन, बहेड़ा, सादड़, कणज, घटबोर, लिसोड़ा, बीजासाल, खाखरा, कड़ाया, सीताफल, बेल, नीम, कचनार, तेंदू, बिस्तेंदू, गोदल, ऊंबिया, इमली, सागवान, बेर, खजूर, अचार या चारोली, कुसुम, हिंगोट, अरीठा, आदि शामिल हैं। कुछ ऐसी प्रजातियाँ भी उगाना चाहिये जो फलों के लिये प्रसिद्ध हैं, भले ही वे छोटे बीज वाली हों। आँवला, बरगद, कैंथगूलर, पीपल, कैर, लिसोड़ा, जाल, खेजड़ी आदि फल के लिये जानी जाती हैं (देखें, डी.एन. पाण्डेय, अरावली के वन्य वृक्ष: वनवर्धन एवं पौधशाला प्रबंध, पृष्ठ 1-24, 1992)।

चूंकि ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स का दायरा धीरे-धीरे बढ़ाना आवश्यक है। इसके लिए सबसे उपयोगी यह है कि ऐसे क्षेत्रों को फॉरेस्ट रेस्टोरेशन के लिये चयनित किये जा रहे बड़े क्षेत्रों के अंदर लेकर बड़े दायरे में बीजारोपण व बहुत आवश्यक हो तो वृक्षारोपण करना चाहिये। बाहर के दायरे में जहां प्रजाति विविधता कम है या क्षेत्र खाली हो गये हैं वहां पर अर्ली-सक्सेशनल, मिड-सक्सेशनल, और लेट-सक्सेशनल प्रजातियों के मिश्रण की मृदा व जल संरक्षण के साथ सीधी बुवाई किया जाना उपयोगी रहेगा। साथ ही थोड़ी-बहुत वनस्पति जो उस क्षेत्र में हो उसका संरक्षण करना उपयोगी रहेगा। ऐसा करने से धीरे-धीरे ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट का दायरा बढ़ने लगेगा। इस रणनीति का एक लाभ यह भी है कि क्षेत्र में पक्षियों द्वारा विकीर्णित होने वाले बीजों का विकीर्णन भी पूरे वृक्षारोपण क्षेत्र में बढ़ेगा। सुरक्षित क्षेत्र में होने वाला अंकुरण और पनपने वाले पौधों के सुरक्षित बड़े पौधों के रूप में विकसित होने की संभावना बढ़ जाती है।

प्राचीन, विशालकाय वृक्षों वाले उष्णकटिबंधीय वन जैव-विविधता की जीती-जागती अनमोल विरासत हैं। इनका संरक्षण वैश्विक प्राथमिकता है। उष्णकटिबंधीय वनों और जैव-विविधता से मानवता को प्राप्त होने वाले सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ हेतु पुराने प्राथमिक वनों का कोई विकल्प नहीं है। प्राकृतिक जलवायु समाधान के रूप में इन वनों के प्रमाण-आधारित प्रबंध में निवेश अनिवार्य है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

भारत की समकालीन राजनीति में साधु-संत-योगियों की पहचान

महावीर सिंह

आजकल प्रिंट व टीवी मीडिया में साधु, संतों व योगियों की भारत की राजनीति में खासी चर्चा रहती है। भारत के संविधान के अनुसार साधु, सन्तो, योगियों को चुनावी राजनीति करने की पूर्ण स्वतंत्रता है। चुनाव लड़ना नागरिक का अधिकार है। इसलिए यह प्रश्न उठाना बेबुनियाद है कि इस सम्मानित श्रेणी के लोग चुनाव की राजनीति करते है। प्रश्न यह हो सकता है कि क्या जो इस श्रेणी के लोग चुनावी राजनीति में है, उनका आचरण, व्यवहार साधु-संतों-योगियों के शास्त्रोक्त गुणों-व्यवहार-दृष्टि (विजन) के अनुरूप है?

यह भी सुनने को मिलता है कि धर्म के बिना राजनीति नही हो सकती। आइए एक आम आदमी की दृष्टि से इन चर्चाओं-परिचर्चाओं को समझने का प्रयास करें। सामान्य रूप से सभी बड़े धर्मों- यथा--हिन्दू, ईसाई, इस्लाम, जैन, सिख आदि धर्मों में संतों, महात्माओं, योगियों के सम्बंध में उनके कर्तव्यों, गुणों आदि पर सम्बंधित शास्त्रों में उल्लेख मिलता है। दैनिक जीवन में भी प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। हिन्दू धर्म में इन्हें संत, साधु, योगी आदि नाम दिए हुए है, इस्लाम में इनके समक्ष पीर, औलिया, दरवेश आदि है तो ईसाई धर्म में इन्हें मुख्यत: संत का नाम दिया हुआ है।

हिन्दू धर्म में साधु, संत व योगी तीन अलग श्रेणियां है।

साधु की पहचान--- सभी मनुष्यों के प्रति उसके व्यवहार में शांति व समता, नम्रता, मित्रता, सद्व्यवहार प्रलक्षित होना चाहिए। साधु का आचरण-व्यवहार-वार्तालाप सत्य पर आधारित हो।साधु में सहनशीलता, जीवमात्र के प्रति दया होती है।साधु के दुश्मन नही हो सकते। उसका स्वयं के शरीर, मन पर पूर्ण नियंत्रण हो। सच्चे साधु के मुंह से दूसरे धर्म, व्यक्ति के लिए निंदा के शब्द निकल ही नही सकते।

साधारण बोल चाल की भाषा में आम आदमी साधु के व्यवहार-आचरण को इस प्रकार समझता है-

पानी बहता और साधु चलता-फिरता भला वरना उनमें मोह, माया के विकार उत्पन्न हो जाएंगे। इस से भी अधिक सरलता से साधु को कुछ प्रसिद्ध दोहों के माध्यम से समझ सकते है-

''सिंहो के झुंड नहीं, हंस न मिले पाँति, लालों की नही बोरियां, साधु न चले जमात'' अर्थात सम, सद्व्यवहारी व ज्ञानी साधु दुर्लभ होते हैं, जमात बनाकर न रहते न चलते न ज्ञान बांटते फिरते।

''जात न पुछो साधु की पूछ लीजिए ज्ञान, मोल करो तलवार का आदि रहण दो म्यान''--अर्थात साधु की जाती उसका ज्ञान है--किस परिवार, धर्म, जाती में पैदा हुआ वह महत्वहीन है। सन्त कहलाने का केवल वह व्यक्ति ही अधिकारी है जो सत्यवादी, आत्मज्ञानी हो। यह गुण संत के व्यवहार, आचरण में झलकता है। कुछ प्रसिद्ध गृहस्थ संतों के रूप में कबीरदास जी व कई ओर नाम उल्लेखित कुए जा सकते हैं। संत शब्द में साधु, सन्यासी, विरक्त, त्यागी सब शामिल है।

इसी प्रकार एक सच्चा योगी अपने ज्ञान का सही तरीके से जनहितार्थ सदुपयोग करता है। वह शरीर को ईश्वरीय कार्यों को पूर्ण करने का साधन मात्र मानता है। मन और इंद्रियों पर उसका पूर्ण नियंत्रण है, इसका उसे कोई अभिमान नहीं होता। योगी अपरिग्रही होता है अर्थात वह अनावश्यक धनदौलत-साधनों का संग्रहण नहीं करता। योगी एक प्रमुख लक्षण होता है--**'आत्मवत् सर्वभूतेषु'** अर्थात सर्वत्र सब में एक ही ईश्वरीय सत्ता को देखता है। योगी अहंकार रहित होता है योगी अपनी मानवीय भूलों को नि:संकोच स्वीकार करता है। सम-विषम सभी परिस्थितियों को योगी निरपेक्ष भाव से देखता है। योगी का व्यवहार-आचरण-वाणी-कर्म में सर्वत्र-सदैव परहित सरस धर्म नहीं भाई की ही भावना झलकती है। समाजिक व धार्मिक दृष्टि से इन अत्यंत गरिमामय पदवियों के धारक जो राजनीति में हैं उनका आचरण, उनके लिए विहित गुणों व आचरण के अनुरूप है या नही इस पैमाने पर ही जांचा जाना चाहिए कि वे राजनीति में आने के बाद सही मायने में इन पदवियों के पात्र हैं भी या नहीं?

प्राय: ही देखने में आया है कि इस श्रेणी के कुछ राजनीतिज्ञ अत्यंत विषैली व मनुष्यों में हर तरह का भेदभाव करने वालीभाषा में आलोचना करते है तो वे संत, साधु या योगी जैसे गरिमामय पदवियाँ कैसे धारण कर सकते हैं? सामान्यत: देखने में तो यही आ रहा है कि कई लोग जो साधु, साध्वी, संत, योगी जैसी अत्यंत सम्मानित पदवियाँ लगाकर राजनीति करते है, उनका आचरण इनके अनुरूप नही है।

साधु संतों से भिन्न कथावाचको की भी बडी अद्भुत दुनिया है। उनके नाम के पीछे भी बड़ी-बड़ी धार्मिक पदवियाँ लगी हुई होती है। इन लोगों का भी समाज पर व राजनीति में बड़ा प्रभाव है। आजकल अनेक ऐसे कथा वाचक बड़े जोर-शोर से आक्रोशित भाषा में, रात और दिन सनातन (जिसको इसे जैसे समझना है समझे) के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं। कई ऐसे नि:स्वार्थ भाव से करते हैं और अखबारी सूचनाओं के अनुसार कईयों को उनके काफिले की व्यवस्था के लिए काफी फीस भी देनी पड़ती है। इस लेखक का इन प्रसिद्ध कथावाचकों से वे जो कुछ कहते-करते है उसके अतिरिक्त इन बातों पर भी ध्यान दें तो अत्यंत परोपकारी कार्य होगा।

बहुत से लोग अपने व्यवसायों, दुकानों, उत्पादों पर देवी-देवताओं, भगवान के अवतारों पर नाम रख लेते हैं उसे रुकवाए। जैसे धरि शंकर पान भंडार, रेस्टोरेंट/ भोजनालय ।/ अगरबती आदि-आदि। शायद किसी अन्य धर्म के अनुयायी ऐसा करते हों। क्या सुधि पाठक इस प्रकार के नाम रखना उचित मानते है?? मंदिरों के नाम भी ऐसे मिलते है जैसे रोजगारेश्वर--पतालेश्वर--दक्षिण मुखी फला-फला देवता आदि। इसी प्रकार लोग मनमर्जी से सार्वजनिक रास्तों, भूमियों पर मंदिर निर्माण कर लेते है। इस से सामान्य मनुष्य के मन-मष्तिष्क में देवी/देवता की प्रतिष्ठता के सम्बन्ध में क्या असर पड़ता होगा? बहुत ही कम लोग अपनी स्वयं की भूमि पर ऐसा करते है। चूंकि नामी कथावाचकों का लोगों पर काफी प्रभाव होता है, उन्हें इस दिशा में अपने भक्तों को सद् मार्ग दिखाना चाहिए।

क्या प्रसिद्ध कथावाचक इस दिशा में कोई सार्थक पहल कर सकते है??

–महावीर सिंह,
(पूर्व आईएएस)

देश की आजादी, जनजाति स्वाभिमान में बिरसा मुंडा का योगदान अविस्मरणीय : उपराष्ट्रपति

कोटडा में भगवान बिरसा मुंडा की जयंती कार्यक्रम में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ शामिल हुये।

- **भगवान बिरसा मुंडा की 150 वीं जयंती पर उदयपुर के कोटडा में जनजाति गौरव महोत्सव आयोजित**

उदयपुर, (कासं)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि भगवान बिरसा मुण्डा का नाम सामने आते ही हालात बदल जाते हैं, महज 25 साल की उम्र भी नहीं हुई और देश की आजादी, जनजाति समाज के स्वाभिमान व मिट्टी के लिए उनका योगदान अकल्पनीय और अविस्मरणीय है। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के उपलक्ष में उदयपुर जिले के सुदूर कोटडा कस्बे में जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग तथा राजस्थान वनवासी कल्याण परिषद के तत्वावधान में आयोजित जनजाति गौरव महोत्सव को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि बड़ा अच्छा लग रहा है, जो हमारे मन में है और सदैव प्रात: स्मरणीय हैं उनका आज सम्मान हो रहा है। उनकी सोच दूरदर्शी थी और उनका संकल्प था कि हमारा राज आएगा और उनका राज जाएगा। सांस्कृतिक सोच को इस बालक योद्धा ने तीन शब्दों में समाहित कर दिया जल, जंगल और जमीन। उन्होंने बिरसा मुण्डा को इस धरती का पुजारी और पर्यावरण का हितैषी बताते हुए कहा कि आपके दृढ़ संकल्प को सच होता देखकर मेरा मन अति प्रसन्न है कि अब अपना देश बदल रहा है। देश के सर्वाच्च पद राष्ट्रपति के पद पर जनजाति की महिला द्रोपदी मूर्मु बिराजमान है और यह हम सभी के लिए गौरव की बात है। यह सम्मान कोई बक्शीस नहीं है, आपका और हमारा अधिकार और उस अधिकार को प्राप्त कर पद को सुशोभित किया है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि संसद में स्थापित भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा हमें हमेशा प्रेरित करेंगी। राष्ट्र भावना का संचार करेंगी।

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि आजादी की लडाई में हजारों लाखों लोगों ने योगदान दिया। पता नहीं क्यों इतिहासकारों ने बिरसा मुंडा के योगदान, मानगढ़ धाम के बलिदान को भूला दिया। आजादी के अमृतकाल में आजादी की लड़ाई के भूले बिसरे नायकों को सम्मान दिया जा रहा है। हर वर्ष 15 नवंबर को बिरसा मुण्डा की जन्म जयंती को राष्ट्रीय जनजाति गौरव दिवस के रूप मनाया जा रहा है।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा का पूरा जीवन राष्ट्रवाद का संदेश है। उन्होंने आमजन से आव्हान किया कि सभी इस महापुरूष को समझे और इनके कृत्य को आदर्श माने और हमेशा राष्ट्रवाद को सर्वापरि रखे। धनखड़ ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में बढ़ते कदमों का जिक्र किया। इस अवसर पर समारोह को संबोधित करते हुए प्रदेश के जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराडी ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा जनजाति गौरव के प्रतीक हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार जनजाति संस्कृति और सम्मान को पुनर्जीवित करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। कार्यक्रम के प्रारंभ में वनवासी कल्याण परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष सत्येंद्र सिंह खारवा एवं राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री भगवान सहाय ने उपराष्ट्रपति का स्वागत किया। सह संगठन मंत्री भगवान सहाय ने वनवासी कल्याण परिषद के विभिन्न प्रकल्पों और गतिविधियों की जानकारी दी।

समारोह में जिले के प्रभारी एवं राजस्व मंत्री हेमंत मीणा, राज्यसभा सांसद चुन्नीलाल गरासिया, लोकसभा सांसद डॉ. मन्नालाल रावत, गोगुंदा विधायक प्रताप भील, उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, उप जिला प्रमुख पुष्करलाल तेली, संभागीय आयुक्त प्रज्ञा केवलरमानी, सीईओ जिला परिषद हेमेंद्र नागर, उपखंड अधिकारी हंसमुख कुमार सहित विभिन्न विभागीय अधिकारी मौजूद रहे। कोटड़ा में आयोजित जनजाति गौरव महोत्सव में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने जनजाति प्रतिभाओं का सम्मान किया। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने एमबीबीएस चिकित्सक डॉ. रामलाल मीणा, डॉ. कन्हैयालाल मीणा, डॉ. खुमाणसिंह मईडा, पीएचईडी के दिलीपसिंह भील, इंजीनियर मुकेश डामोर, अंतर्राष्ट्रीय तीरंदाज धनेश्वर तथा अंतराष्टीय तीरंदाज नरेश डामोर को प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

वहीं राजस्थान वनवासी कल्याण परिषद परिसर में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ मां के नाम अभियान के तहत अपनी माताश्री स्व. केशरीदेवी तथा सुदेश धनखड़ ने अपनी माता भगवतीदेवी की स्मृति में पौधारोपण किया। उप वन संरक्षक अजय चित्तौडा ने धनखड़ को जिले में अभियान के तहत पौधरोपण की जानकारी दी। कोटडा स्थित राजस्थान वनवासी कल्याण परिषद परिसर में धनखड़ के स्वागत में लोक कलाकारों ने परंपरागत गवरी नृत्य किया। उन्होंने एक कलाकार से ढोल लेकर स्वयं ढोल पर थाप देकर कलाकारों का उत्साहवर्धन किया।

स्कूल व्याख्याता प्रतियोगी परीक्षा (संस्कृत शिक्षा विभाग) आज से

- **21 नवंबर तक चलेगी परीक्षा, इस परीक्षा में 1 लाख 12 हजार 968 अभ्यर्थी शामिल होंगे**

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग (आरपीएससी) की ओर से स्कूल व्याख्याता प्रतियोगी परीक्षा-2024 (संस्कृत शिक्षा विभाग) का आयोजन 17 से 21 नवंबर तक होगा। इस परीक्षा में 52 पदों के लिए 1 लाख 12 हजार 968 अभ्यर्थी पंजीकृत किए गए हैं। पहले दिन रविवार को जनरल अवेयरनेस एंड जनरल स्टडी की परीक्षा होगी। यह परीक्षा अजमेर, जयपुर, जोधपुर, कोटा और उदयपुर के जिला मुख्यालयों पर आयोजित की जाएगी। अभ्यर्थियों को पांचवें विकल्प को भरने के लिए 10 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जाएगा। जनरल अवेयरनेस एंड जनरल स्टडी विषय की परीक्षा रविवार को सुबह 10 से 11:30 बजे तक होगी।

ऐच्छिक विषयों की परीक्षाएं 18 से 21 नवंबर तक दो पारी में ली जाएंगी। परीक्षा केंद्र पर परीक्षा प्रारंभ होने के एक घंटे पूर्व तक ही प्रवेश दिया जाएगा। अभ्यर्थियों को परीक्षा केंद्र पर मूल फोटो पहचान-पत्र लेकर उपस्थित होना होगा। ऐच्छिक विषय हिन्दी की परीक्षा 18 नवंबर सुबह 9 से 12 बजे तक, इतिहास की 18 नवंबर दोपहर 2:30 से सायं 5:30 बजे तक, राजनीति विज्ञान विषय की 19 नवंबर सुबह 9 से 12 बजे तक, अंग्रेजी विषय की 19 नवंबर दोपहर 2:30 से सायं 5:30 बजे तक, यजुर्वेद विषय की 20 नवंबर सुबह 9 से 12 बजे तक, जनरल ग्रामर विषय की 20 नवंबर दोपहर 2:30 से 5:30 बजे तक, ग्रामर विषय की 21 नवंबर सुबह 9 से 12 बजे तक और लिटरेचर विषय की 21 नवंबर दोपहर 2:30 से सायं 5:30 बजे तक आयोजित की जाएगी।

राशिफल रविवार 17 नवम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, रोहिणी नक्षत्र सायं 5:23 तक, शिव योग रात्रि 8:21 तक, तैतिल करण प्रात: 6:52 तक, चन्द्रमा रात्रि 4:31 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-वृष, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज द्विपुष्कर योग सायं 5:23 से रात्रि 9:07 तक है। राजयोग सायं 5:23 से सूर्योदय तक है। आज अशून्य शयन व्रत, रोहिणी व्रत है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:11 से 9:31 तक, लाभ-अमृत 9:31 से 12:11 तक, शुभ 1:31 से 2:31 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:52, सूर्यास्त 5:31

मेष
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

वृष
वर्तमान में चल रहा मानसिक तनाव दूर होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

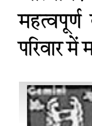

मिथुन
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च में वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा।

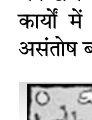

कर्क
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यक्तिगत परेशानियों से राहत मिलेगी।

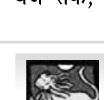

सिंह
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

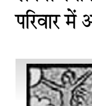

कन्या
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

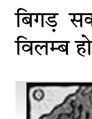

वृश्चिक
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। अतिथियों का आगमन रहेगा।

धनु
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी।

मकर
महत्वपूर्ण मामलों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सुख-सुविधाओं पर धन खर्च होगा।

कुंभ
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

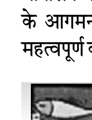

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।